बी० ए० पार्ट–2 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अतिथि व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

'स्वतंत्रता की ओर' शीर्षक कविता का भावार्थ

इस कविता की रचना सन् 1934 ई० में हुई। यह कवि के काव्य संग्रह 'उमंग' में सकंलित है। तत्कालीन भारत में राष्ट्रीय क्रांति जोरो पर थी। राष्ट्रीय आंदोलन की लहर से कोई अछूता न था। सम्पूर्ण भारत में गाँधी का नेतृत्व इस तरह प्रभावी था कि उनके इशारे पर हर कोई मर–मिटने को तैयार था। मातृभूमि के लिए देशवासियों का एक ही नारा था कुर्बानी । ये किसी भी मूल्य पर मातृभूमि की आजादी चाहते थे। नेपाली की सहजता प्रवृति राष्ट्रीय चेतना निरन्तर सक्रिय रही, क्योंकि परिवेश और राष्ट्रीय परिस्थितियों का सतत् सहयोग उन्हें प्राप्त हुआ। 'स्वतंत्रता की ओर' कविता राष्ट्रीय आन्दोलन की प्राणदायिनी लहर से उद्भूत परिवेश को रूपायित करती है।

गोपाल सिंह 'नेपाली' द्वारा रचित 'स्वतंत्रता की ओर' कविता की प्रत्येक पंक्ति राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत है। महात्मागांधी द्वारा चलाए जा रहे स्वंतत्रता आन्दोलन जोरो पर था। गाँधी नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन छिड़ा हुआ था। अंग्रेजों का शासन शोषण, उत्पीड़न तथा दमन का शासन बना हुआ था। ऐसी विषम परिस्थितियों में भला गोपाल सिंह नेपाली जैसा संवेदनशील और राष्ट्रभक्त कवि कैसे चुप रह सकता था। कवि ने राष्ट्रमुक्ति के लिए अपनी लेखनी द्वारा क्रांति का आह्वान करता है और लोगों से गाँधी जी के स्वतंत्रता आन्दोलन को और तेज करने का आग्रह करता है।

प्रस्तुत कविता में कवि कहता है कि मातृभूमि की बलिवेदी पर न्यौछावर होनेवाले सपूतों को देखकर पूरी दुनिया चकित है। बच्चा और बूढ़ा दोनों ही जोश से भरे हुए हैं। बच्चा–बच्चा मर –मिटने को तैयार है। बूढ़ों की रंगों में भी फिर से मानो यौवन का संचार

हो गया है और शहादत के लिए उनमें पागलपन सा कुछ है। कवि स्वयं को स्वतंत्रता आन्दोलन का एक गवाह के रूप में उपस्थित करता हुआ कहता है कि भारत का कण–कण अब मुक्ति–संघर्ष करने को आतुर है, चाहे वह छोटा–सा गाँव हो या फिर राजधानी दिल्ली। क्या अनपढ़ गँवार या फिर ज्ञानी दोनों ही गाँधी दर्शन से अभिप्रेरित हैं। गाँधी की तपस्या को अब सभी ने पहचान लिया हैं। पूरी दुनिया में गाँधी की चर्चा है। राष्ट्रमुक्ति का यह आंदोलन अहिंसात्मक होते हुए भी तूफानी है। सम्पूर्ण विश्व में यहाँ की स्वतंत्रता संघर्ष की कहानी कही जा रही है। अपनी जन्मभूमि पर कुर्बानी देने के लिए सभी उद्यत हैं। चाहे वह बुढ़िया नानी हो या फिर गोद की नन्हीं बच्ची हो; चाहे महलो की महरानी हों या फिर ठकुरानी हो। देश की बलिवेदी पर अपनी भेंट चढ़ाने के लिए सभी में एक होड़ सी मची हुई है। इनकी बहादुरी को देख दुनिया लज्जित–सी है, क्योंकि इनकी तुलना किसी से नहीं ली जा सकती। अंगेजों द्वारा चलाए जा रहे गोले और तोपों की बौछार को रोकने के लिए यहाँ के किशोर अपनी छाती को हर्षपूर्वक आगे कर दे रहे हैं, जिसे देखकर दुनिया दंग है। स्वयं स्वर्ग भी इनके बलिदानी तेवर को देख गर्व से भर उठा है। संपूर्ण भारतवर्ष राष्ट्रीय चेतना से मानों ओतप्रोत हो गया है। विश्व के हर–देश में यही कहानी–दुहरायी जा रही है।

भारतीयों को देश के प्रति समर्पण भाव से युक्त देखकर कवि अपने शब्दों को रोक नहीं पाता वह उस परिवेश को रूपायित कर बैठता है, जहाँ प्रत्येक भारतवासी अपनी अवस्था व स्थिति भूलकर कुर्बान होने के लिए चल पड़ता है। कवि की चेतना राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक होती हुई जन–जन की चेतना बन जाती है। कवि की धारणा गाँधीवाद में है, जिसका प्रभाव चारों तरफ दिखाई पड़ रहा है। गाँधीवाद से प्रभावित उस परिवेश का रूपायन कवि का मुख्य उद्देश्य प्रतीत होता है। सरल और बातचीत की भाषा में रचित यह कविता अभिधात्मक है। इसे सपाटबयानी की कविता भी कह सकते हैं, किन्तु इसमें तुकबन्दी का आग्रह कुछ अधिक है। तुकबन्दी की अधिकता के कारण यह कविता बालकविता सी प्रतीत होती है।

गोपाल सिंह 'नेपाली' की कविताओं का मुख्य स्वर राष्ट्रीय चेतना का है। वे गाँधीवाद के प्रभाव को गहराई से महसूस करते हैं। सम्पूर्ण भारतवर्ष उस प्रभाव के नशे में दिखाई पड़ता है। मानो राष्ट्रीय आन्दोलन की लहर न होकर भांग का कोई नशा हो, जो हर उम्र के बच्चे बूढ़े को समान रूप से प्रभावित कर रहा हो, और सबके सब अपनी अवस्था तथा स्थिति को भूलकर राष्ट्रमुक्ति के लिए कुर्बान हो जाना चाहते है। नेपाली की यह कविता तद्युगीन परिवेश में गाँधीवादी के प्रभाव को दर्शाती है।